रिकार्ड:-यह कौन आज आया.... ओम शान्ति प्रात: क्लास 21-3-67

रात को दिन बनाने के लिये बाप को आना पड़े संगम पर अभी तो बच्चे जानते हैं कि बाप आया हुआ है। पहले हम शुद्र वर्ण के थे। शुद्र बुधी ही थे। वर्णों वाला चित्र यहां पर नही है। बच्चे सुनते है कि यह चित्र भी मधुबन मे होना चाहिये। समझाने के लिये तो यह बहुत अच्छा है। बच्चे जानते है कि हम इन वर्णों मे कैसे चक्र लगाते है। जो सर्वीसेबुल बच्चे है वो जानते है कि मधुबन मे यह चित्र नही है। तो भेज देना चाहियेगा। यह भी मुख्य चित्र है। बच्चे जानते है कि अभी हमको परमपिता परमात्मा ने शुद्र से ब्राहम्ण आकर बनाया है। कल्प-2 कल्प के संगम युग मे हम ब्राहम्ण बनते है। ब्राहम्णो को पुरुशोतम नही कहेंगे। पुरुशोतम तो देवताओं को कहेंगे। ब्राहम्ण यहां पुरुषार्थ करते हैं पुरुशोतम बनने का। पतित से पावन बनने लिये ही बाप को बुलाते रहते है। तो अपने से पुछना चाहिये कि हम पुरुशोतम कहां तक बन रहे है। स्टूडेन्टस भी तो पढाई के लिये विचार सागर मंथन करते है नां। समझते है कि इस पढाई से हम यह बनेंगे। तुम बच्चों की बुधी मे है कि अभी हम ब्राहम्ण बन रहे है देवता बनने के लिये। यह है अमुल्य जीवन क्यो कि तुम ईश्वरिय सन्तान हो। ईश्वर तुमको राजयोग सिखा रहे है। पतित से पावन बना रहे है। पावन देवता बनना है नां। तुम बच्चे जानते हो कि कल्प-2 हम ब्राहम्ण बन कर फिर देवता बनते है। वर्णों पर भी समझाना बहुत अच्छा है। सन्यासी आद इन बातों पर नही ठहरेंगे। बाकी हां 84 जन्मों का हिसाब तो समझ भी सकते है। यह भी समझ सकते है कि हम सन्यास धर्म वाले 84 जन्म नही लेते है। इसलामी बोदी आद भी समझेंगे कि हम भी 84 जन्म नही लेते है। हां पुनर्जन्म लेते हैं परन्तु कम। तुम्हारे समझाने से झट समझ जावेंगे। समझाने की भी युक्ति चाहिये। तुम बच्चे यहां सम्मुख बैठे हो तो बाबा बुधी को रिफरैश करते रहते है। जैसे और बच्चे भी यहां आते है रिफरैश होने लिये। तुमको तो रोज बाप रिफ्रैश करते है कि यह-2 धारना करो। बुधी मे यही ख्यालात चलती रहे कि हम कैसे 84 जन्म लेते है। कैसे फिर शुद्र से ब्राहम्ण बनते है। ब्रहमा की सन्तान ब्राहम्ण। अब ब्राहम्ण कहां से आवे। बाप बैठ समझाते है कि हम दादा का नाम ब्रहमा रखते है। यह जो भी ब्र, कु, कु है तो वो सब फैमली हो गई। तो जरूर ऐडाप्टिड हो गये नां। बाप ही ऐडाप्ट करते है। उनको बाप ही कहा जाता है दादा नही कहा जाता है। बाप को बाप ही कहा जाता है। मिलकियत मिलती ही बाप से है। कोई तो चाचा मामा काका बादरी वाले भी ऐडाप्ट करते है। जैसे बाबा ने सुनाया था नां कि एक बच्ची किचरे के डिब्बे मे पड़ी थी वो कोई ने उठा कर कोई को गोद मे दी क्यो कि उनको अपना बच्चा नही था। तो बच्ची जिनकी गोद मे गई तो उन्ही को मां-बाप कहने लग पड़ेगी नां। यहां फिर है बेहद की बात। तुम बच्चे भी जैसे कि बेहद के किचरे के डब्बे मे ही पड़े हुये थे। विषय वैतरणी नदी मे पड़े हुये थे। वैशाल्य मे किचरा ही तो है नां। कितने गन्दे हुये पड़े है। ड्रामा अनुसार बाप ने आकर इस किचरे के डिब्बे से निकाला है। और तुमको ऐडाप्ट किया है। तमोप्रधान को किचरा ही तो कहेंगे नां। आसुरी गुण वाले मनुष्य है। देहअभिमान काम क्रोध... यह बड़े विकार है नां। तो तुम रावण के बड़े रिफ्यूज मे पड़े हुये थे। तुम वास्तव मे तो रिफ्युजी भी हो। अब बेहद के बाप की आकर शरण ली है। रिफ्यूज से निकल कर गुल-गुल देवता बनने। इस समय सारी दुनियां रिफ्यूज के बड़े डिब्बे मे पड़ी हुई है। बाप आकर तुम बच्चों को किचरे से निकाल कर अपना बनाते है। परन्तु किचरे का रहना ऐसा हिले हुये है जो कि निकालो फिर भी किचरा ही अच्छा लगता है। बाप आकर बेहद के किचरे से निकालते है। बुलाते भी है कि बाबा आकर हमको गुल-गुल बनाओ। कांटो के जंगल से निकाल कर फूल बनाओ। खुदाई बगीचे मे बिठाओ। अभी तो असुरों के जंगल मे पड़े है। बाप तुम बच्चों को बाग मे ले जाते है। शुद्र से हम ब्राहम्ण बने है फिर देवता बनेंगे। यह देवताओं की राजधानी है। ब्राहम्णो की राजधानी है नही। भल तुम्हारा पाण्डव नाम है परन्तु पाण्डवो को राजाई नही है। राजाई प्राप्त करने लिये ही बाप के साथ बैठे हो। बेहद की रात पूरी होकर अब बेहद का दिन शुरू होता है। गीता

सुनाने कौन आया सवेरे.....आते है रात को मिटा कर दिन बनाने। अर्थात स्वर्ग की स्थापना नर्क का विनाश कराने। यह भी खुशी में रहे तो भी रबुशी हो। खुशी में ही ना होने कारण रबुशी ही नही होती है। तो कब आसुरी स्वभाव दिखाते है। जिस यज्ञ से ही इतना बनते है उस यज्ञ की तो बहुत दिल से सेवा करनी होती है। हड्डियां भी इस में दे देनी चाहिये। अपने को देखना चाहिये कि जो चलने चलते है उससे हम ऊंच पद पा सकेंगे। वैसमझ बच्चे तो नही है नां। समझ सक्ते है कि राजा कैसे प्रजा कैसे बनती है। बाबा ने रथ भी अनुभवी ही लिया है, जो कि राजाओं आद को भी अच्छी रीती जानते है। राजाओं के तो दास दासियों को भी बहुत रबुशी मिलता है। वो तो राजाओं के साथ ही रहती है। परन्तु कहलावेगी तो दासी। सुख तो है नां। जो राजा-रानी रवावें वो ही उनको मिले। बाकी बाहर वाले थोड़े ही रवा सक्ते थे। दासियों में भी नम्बरवार होती है कोई तो श्रृंगार करने वाली कोई बच्चों को सम्भालने वाली। कोई फिर झाड़ू आदि लगाने वाली। यहां के राजाओं को ही इतनी दास-दासियां थी तो वहां तो कितनी ही ढेर होंगी। सब पर अलग-2 अपनी-2 चार्ज होती है। रहने का स्थान अलग होगा वो कोई महल की तरह सजाया हुआ नही होगा। जैसे कि सरवन्टस कुवार्टर होते है नां। अन्दर आवेंगे जरूर परन्तु रहना तो सरवन्टस क्वार्टरों में ही होगा नां। तो बाप अच्छी रीती समझाते है कि अपने पर ही रहम करो कि हम ऊंच ते ऊंच बनें। हम अभी शूद्र से ब्राह्मण बने है सो भी अहोसौभाग्य। फिर देवता बनेंगे। यह संगम युग तो बहुत ही कल्याण कारी है। तुम्हारी हर बात में कल्याण भरा हुआ है। भण्डारे में भी योग में रह कर भोजन बनावें तो भी बहुतों का कल्याण है। श्रीनाथ द्वारे पर भोजन बनाते है बिलकुल ही शान्त में रह कर। श्रीनाथ ही याद रहता है। भक्त अपनी भक्ति में ही बहुत मस्त रहते है। तुमको फिर ज्ञान में मस्त रहना है। कृष्ण की ऐसे भक्ति होती है जो कि बात मत पूछो। वृन्दावन में दो बच्चियां है पूरी भक्त है। कहती है बस हम यहां ही रहेंगी। कृष्ण की ही याद में। उनको बहुत कहते है कि अच्छा मकान में चल कर रहो। ज्ञान लो। बोलती है हम तो यहां ही रहेंगी। तो इसको कहेंगे भक्त शिरोमणी। कृष्ण पर कितनी बलिहार जाती है। अभी तुमको बलिहार जाना है बाप पर। पहले-2 शुरू में शिव बाबा कितने बलिहार गये। ढेर के ढेर आये। जब भारत में आये सो बहुतों को अपना घर याद आने लगा। कितने ही चले गये। 250 आये थे। बाकी 75 रह गये है। बाकी सब-चले गये। वो भी लिस्ट निकाल कर देखनी चाहिये। बाबा के पास तो विशाल बुद्धि नहीं जो कि बर कै दे सके। गुहचारी तो बहुतों पर ही आती है नां। कब कैसी दशा कब कैसी दशा बैठती है। बाबा ने समझाया है बौद्ध भी आते है तो पूछो कहां आये हो? घर में चित्र देखा ब्र.कु, कु का। तो यह तो परिवार हो गया नां। एक है निराकार परमपिता परमात्मा। दूसरा फिर प्रजा पिता ब्रह्मा भी गाया हुआ है। हम सब उनके बच्चे है। दादा है शिव बाबा। वर्सा उनसे मिलता है। वो राय देते है कि मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। कल्प पहले भी ऐसे राय दी है। कितनी ऊंच पढ़ाई है। यह भी तुम्हारी बुद्धी में है कि हम बाप से वर्सा ले रहे है। हमको देवता बनना है। तो जरूर मैं मैं दैवी गुण भी होने चाहिये। देवतायें कितना थोड़ा रवाते है। उनमें तो हवस थोड़े ही रहती है। 36 प्रकार भोजन बनाते थे। रवाते वो कितना जरा थे। रवान-पान की हवश रवना इसको भी आसुरी ही चलन कहा जाता है। दैवीगुण धारण करने है तो रवान-पान बड़ा शुद्ध और सात्विक होना चाहिये। परन्तु माया ऐसी है जो कि एकदम पत्थर बुद्धी बना देती है। फिर तो पद भी ऐसा ही मिलेगा। बाप कहते है अपना कल्याण करने दैवी गुण धारण करो। अच्छी रीती पढ़ेंगे और पढ़ावेंगे तो तुमको ही वजीफा मिलेगा। बाबा नही देते है। तुम आप ही अपने ही पुरुषार्थ से पाते हो। अपने को देखना चाहिये कि कहां तक हम सर्विस करते है। हम क्या बनेंगे? इसी समय शरीर छूट जावे तो हम क्या पद पावेंगे? बाबा से कोई पूछे तो बाबा झट बतावे। फिर ऐसे बताया जाता है कि फलाना पद पावेंगी। पुरुषार्थ

ही नही करते है तो कल्प-कल्पान्तर लिये ही अपने को घाटा डालते है। अच्छी सर्विस करने वाले जरूर अच्छा पद पावेंगे। अन्दर में पता रहता है कि यह दास-दासियां जाकर बनेगी। बाहर से कह नही सकते है। स्कूल में भी स्टुडेन्ट समझ सकते है कि सीनियर बनेंगे वा जुनियर।फिर यहां पर भी ऐसे ही है। जुनियर कम पद पावेंगे। शाहुकारों में भी सीनियर और जुनियार होंगे।दास-दासियों में भी सिनीयरऔर जुनियर होंगे।सीनियर वालों का दर्जा ऊंचा होता है। झाडू लगाने वाली दासी को कब अन्दर आने का हुक्म नही होता है। इन सभी बातों को अभी ही समझ सकते है।पिछाड़ी में तो और भी अच्छी रीती समझ जावेंगे। ऊंच बनने वालों को फिर रिगार्ड भी रखना पड़ता है। जैसे दैवो कुमारका है तो वो सीनियर है तो उनका रिगार्ड भी रखना चाहिये।महारथियों का रिगार्ड नही रखते है तो अपने ऊपर पापों का बोझा चढ़ाते है।यह सब बातें बाप ध्यान में देते है।बहुत खबरदारी चाहिये। नम्बरवार किसका रिगार्ड कैसे रखा जाता है यह भी कोई नही जानते है।समझते नही है कि यह हमारे से ऊंच है हमको उनका रिगार्ड रखना चाहिये। कोई तो मैनर्स सीखते ही नही है।सुधरना ही जैसे कि मुश्किल है। गारन्टी करके आये है कि हम सुधरेंगे नही। बाबा तो हर एक को जानते है ना। किसको सीधा कहे तो ट्रेटर बनने में देरी नही करें। फिर कुमारियों माताओं आद पर भी कष्ट आ जाते है। सितम फिर उनको सहन करने पड़ते है। ,बहुत करके मातायें ही लिखती है कि बाबा हमको बहुत तंग करते है।हम इस बन्धन से कैसे छूटे? पुरूष तो कोई ऐरा-गैरा होगा जो कि कहेगा जबकि अन्दर में दिल होती है बाहर से आकर कहेंगे बाबा हमको शादी के लिये बहुत तंग करते है हम क्या करें। अरे तुम कोई जनावर थोड़ेई हो जो कि जबरदस्ती करेंगे। अन्दर में दिल हो रही है तब ही पूछते हो कि क्या करें? तो बाबा भी कहेंगे अच्छा भल शादी करो। तुम रह नही सकेंगे। इससे तो पूछने की भी बात नही रहती है। जीवात्मा अपना ही मित्र है अपना ही शत्रु है। जो चाहो सो ही करो। पूछना माना कि दिल है। मुख्य बात है याद की। याद से ही तुम पावन बनते हो। यह ल-न नम्बरवन पावन है ना। मम्मा कितनी सर्विस करती थी। ऐसे तो कोई कह नही सकते है कि हम मम्मा से होशियार है। मम्मा ज्ञान में सबसे तीखी थी। बाकी रहा योग। योग में कमजोर होते है तो फिर भोगना भी भोगनी पड़ती है। कारण तो होता है ना।बुधी से यह समझने की बातें है। योग से ही विकर्म विनाश हो और विकर्म विनाश होते है। और सतोप्रधान बन सकते है। योग की कमजोरी थी। भल ड्रामा कह कर शान्त हो जाते है फिर भी कारण बताया जाता है।योग की कमी थी। जन्म-जन्मान्तर का बोझा तो सिर पर ही है ना। तो ऐसा ही पार्ट बन गया। यो तो समझते थे कि अन्त में मम्मा रहेगी बाबा चले जावेंगे। परन्तु ड्रामा में ही कुछ और था और ही और हो गई। योग की कमी बहुतों में है। याद में रह नही सकते है। बाबा अपने लिये भी बताते है बार-2 भूल जाता हूं। बाकी,बच्चों की बातें सामने आ जाती है तो याद भूल जाते है। यह भी कमी समझते है। फिर उसके लिये सवेरे पुरूषार्थ करते है। भक्ति में भी बुधी नही ठहरती होगी तो अपने को चिऊंटी पहनते है। फिर यह ख्याल आता है कि बाबा की याद ही नही आती रहेगी तो अपने को चिऊंटी पहनेंगे। याद ही नही करेंगे तो विकर्म विनाश कैसे होंगे? लॉ कहता है कि पिछाड़ी में याद में बैठे-2 ही शरीर छोड़ना है। शिव बाबा की याद में है प्राण तन से निकले। एक बाप के बिना और कोई को याद नही करें। कहीं भी आसक्ति नही हो।तो यह प्रैक्टिस करनी होती है। हम तो नंगे ही आये है फिर नंगे ही जाना है। बच्चों को बार-2 समझाते रहते है कि बहुत मीठा बनना है। दैवीगुण भी होने चाहिये।देहअभिमान का भूत होता है ना। अपने पर बहुत ध्यान रखना है। बहुत प्यार से चलना है। बाप को याद करना है और चक्र को याद करना है। चक्र का राज़ तो किसको समझाओ तो भी वण्डर खावें। 84के जन्म कोई को याद नही रहते है तो 84लाखों को कैसे याद कर सकेंगे। ख्याल में भी आ नही सकता है। इस चक्र को ही याद रखो तो भी अहोसौभाग्य। अभी तो नाटक पूरा होता है वैराग पूरा-2 होना चाहिये।और